

---

shrIsubrahmaNyamUlamāntrastavaH

श्रीसुब्रह्मण्यमूलमन्त्रस्तवः

Document Information

---

Text title : subrahmaNyamUlamāntrastavaH

File name : subrahmaNyamUlamāntrastavaH.itx

Category : subrahmanya, mantra

Location : doc\_subrahmanya

Proofread by : Sivakumar Thyagarajan shivakumar24 at gmail, PSA Easwaran

Description-comments : Subrahmanya Stuti Manjari, Mahaperiaval Trust

Acknowledge-Permission: Mahaperiaval Trust

Latest update : December 23, 2016

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 17, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

## श्रीसुब्रह्मण्यमूलमन्त्रस्तवः



ॐ श्रीगणेशाय नमः ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मूलमन्त्रस्तवं शिवम् ।

जपतां शृण्वतां नृणां भक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ १ ॥

सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वरोगनिवारणम् ।

अष्टैश्वर्यप्रदं नित्यं सर्वलोकैकपावनम् ॥ २ ॥

शरारणयोद्भवं स्कन्दं शरणागतपालकम् ।

शरणं त्वां प्रपन्नस्य देहि मे विपुलां श्रियम् ॥ ३ ॥

राजराजसखोद्भूत राजीवायतलोचन ।

रतीशकोटिसौन्दर्यं देहि मे विपुलां श्रियम् ॥ ४ ॥

वलारिप्रमुखैर्वन्द्य वल्लीन्द्राणीसुतापते ।

वरदाश्रितलोकानां देहि मे विपुलां श्रियम् ॥ ५ ॥

नारदादिमहायोगिसिद्धगन्धर्वसेवित ।

नववीरैः पूजिताङ्गे देहि मे विपुलां श्रियम् ॥ ६ ॥

भगवन् पार्वतीसूनो स्वामिन्भक्तार्तिभञ्जन ।

भवत्पदाब्जयोर्भक्तिं देहि मे विपुलां श्रियम् ॥ ७ ॥

वसु धान्यं यशः कीर्तिं अविच्छेदं च सन्ततेः ।

शत्रुनाशनमद्याशु देहि मे विपुलां श्रियम् ॥ ८ ॥

इदं षडक्षरं स्तोत्रं सुब्रह्मण्यस्य सन्ततम् ।

यः पठेत्तस्य सिद्ध्यन्ति सम्पदश्चिन्तिताधिकाः ॥ ९ ॥



हृदजे भक्तितो नित्यं सुब्रह्मण्यं स्मरन्बुधः ।

यो जपेत्प्रातरुत्थाय सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ १० ॥

इति कुमारतन्त्रागर्तं श्रीसुब्रह्मण्यमूलमन्त्रस्तवः सम्पूर्णः ।

Proofread by Sivakumar Thyagarajan shivakumar24 at gmail.com,  
PSA Easwaran

---

——  
*shrIsubrahmaNyamUlamantastavaH*  
pdf was typeset on September 17, 2023  
——

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

